



एग्री मैगज़ीन

(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)

वर्ष: 03, अंक: 04 (अप्रैल, 2026)

www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एन.: 3048-8656

सतत कृषि प्रथाओं का अर्थशास्त्र

डॉ. हरकेश कुमार बलाई¹ एवं *जूही सिंह²

¹असिस्टेंट प्रोफेसर, फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत

²स्टूडेंट, बी.एससी. (ऑनर्स) एग्रीकल्चर, जगन्नाथ यूनिवर्सिटी, चाकसू, जयपुर, राजस्थान, भारत

*संवादी लेखक का ईमेल पता: lejuhisingh@gmail.com

कृषि किसी भी राष्ट्र की अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। भारत जैसे कृषि-प्रधान देश में अधिकांश जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है। बीते वर्षों में उत्पादन बढ़ाने के लिए रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और अधिक सिंचाई का अत्यधिक उपयोग किया गया, जिससे तत्काल लाभ तो मिला, परंतु इसके दुष्परिणाम भी सामने आए—मिट्टी की उर्वरता में कमी, जल स्रोतों का क्षरण, पर्यावरण प्रदूषण और किसानों की बढ़ती लागत। इन समस्याओं से निपटने के लिए सतत कृषि प्रथाओं का विकास हुआ, जो दीर्घकालिक और संतुलित विकास पर आधारित हैं।

सतत कृषि का अर्थ

सतत कृषि का अर्थ ऐसी खेती प्रणाली से है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए भविष्य की पीढ़ियों के संसाधनों का संरक्षण किया जाए। इसमें प्राकृतिक संसाधनों का संतुलित उपयोग, पर्यावरण की सुरक्षा और किसानों की आय में स्थिरता को महत्व दिया जाता है।

सतत कृषि के उद्देश्य

- मिट्टी की उर्वरता को बनाए रखना
- जल का संरक्षण और उचित उपयोग
- पर्यावरण प्रदूषण को कम करना
- जैव विविधता को सुरक्षित रखना
- किसानों की आय में वृद्धि करना

सतत कृषि प्रथाओं के प्रमुख घटक

1. जैविक खेती

इसमें गोबर खाद, हरी खाद, वर्मी खाद तथा जैविक कीटनाशकों का उपयोग किया जाता है। इससे मिट्टी की गुणवत्ता सुधरती है और स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

2. फसल चक्र

एक ही खेत में अलग-अलग फसलों को क्रम से उगाया जाता है, जिससे मिट्टी के पोषक तत्वों का संतुलन बना रहता है और रोगों का प्रकोप कम होता है।

3. मिश्रित खेती

एक साथ कई फसलों की खेती करने से जोखिम कम होता है और उत्पादन में स्थिरता आती है।

4. संरक्षण कृषि

इसमें कम जुताई, फसल अवशेषों का संरक्षण और मिट्टी को ढककर रखना शामिल है, जिससे मिट्टी का कटाव रुकता है और नमी बनी रहती है।

5. जल संरक्षण तकनीकें

बूंद-बूंद सिंचाई, फुहारा सिंचाई तथा वर्षा जल संचयन के माध्यम से जल का सही उपयोग किया जाता है।

6. समेकित पोषक तत्व प्रबंधन

जैविक और रासायनिक उर्वरकों का संतुलित उपयोग कर मिट्टी की उर्वरता बनाए रखी जाती है।

7. समेकित कीट प्रबंधन

कीटों को नियंत्रित करने के लिए प्राकृतिक और यांत्रिक उपायों का प्रयोग किया जाता है, जिससे रासायनिक दवाओं पर निर्भरता कम होती है।

सतत कृषि का अर्थशास्त्र

सतत कृषि का अर्थशास्त्र केवल उत्पादन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लागत, लाभ, संसाधनों के संरक्षण और भविष्य की स्थिरता पर आधारित है।

लागत में परिवर्तन

शुरुआत में सतत कृषि अपनाने पर कुछ अतिरिक्त प्रयास और संसाधन लगते हैं, जैसे जैविक खाद तैयार करना या नई विधियों को सीखना। लेकिन समय के साथ रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों पर खर्च कम हो जाता है, जिससे कुल लागत घटती है।

आय और लाभ: प्रारंभिक वर्षों में उत्पादन थोड़ा कम हो सकता है, लेकिन धीरे-धीरे मिट्टी की गुणवत्ता सुधरने से उत्पादन स्थिर हो जाता है। साथ ही, जैविक उत्पादों की बाजार में अधिक मांग होने के कारण किसानों को बेहतर मूल्य मिलता है।

जोखिम में कमी: मिश्रित खेती और फसल विविधता के कारण किसी एक फसल के खराब होने पर किसान पूरी तरह प्रभावित नहीं होता, जिससे आर्थिक जोखिम कम होता है।

संसाधनों का संरक्षण: जल, भूमि और ऊर्जा का संतुलित उपयोग करने से संसाधनों की बचत होती है और भविष्य में भी उनका उपयोग संभव रहता है।

रोजगार के अवसर: सतत कृषि में श्रम की आवश्यकता अधिक होती है, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के अवसर बढ़ते हैं।

दीर्घकालिक स्थिरता: सतत कृषि प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखती है, जिससे भविष्य में भी उत्पादन संभव बना रहता है और किसानों को स्थायी आय प्राप्त होती है।

पर्यावरणीय और सामाजिक प्रभाव

सतत कृषि पर्यावरण और समाज दोनों के लिए लाभकारी है। यह मिट्टी, जल और वायु को प्रदूषण से बचाती है, जैव विविधता को बढ़ावा देती है और किसानों के स्वास्थ्य की रक्षा करती है। इसके साथ ही यह ग्रामीण जीवन स्तर को सुधारने में भी सहायक होती है।

निष्कर्ष

सतत कृषि केवल एक विकल्प नहीं, बल्कि भविष्य की आवश्यकता है। यह न केवल पर्यावरण की रक्षा करती है, बल्कि किसानों की आय को स्थिर और सुरक्षित बनाती है।